देश–विदेश में अहिंसा को प्रतिष्ठित करने पदयात्रा पर निकले आचार्य महाश्रमण

लाल किले से अहिंसा यात्रा का आगाज

2018 तक नेपाल, भूटान सहित देश के 12 राज्यों में 10 हजार कि.मी. की दूरी तय करेंगे।

दिल्ली 9 नवम्बर 2014

लाल किला का विशाल मैदान, चारों ओर उत्साह का माहौल, ''अहिंसा यात्रा सफल हो – सफल हो'' के नारो से गुंजता पंडाल, विभिन्न धर्मों की छटा बिखेरते हजारों लोग यह दृश्य था आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा आगामी 10 हजार कि.मी. की अहिंसा यात्रा के शुभारंभ का। आज दोपहर में लाल किले की प्राचीर से जैन तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें गुरु आचार्य महाश्रमण ने नये इतिहास का सर्जन करते हुए नेपाल के उपराष्ट्रपति परमानन्द झा की गरिमामय उपस्थिति में नेपाल, भूटान सहित देश के 12 राज्यों हेतु पदयात्रा के रूप में अहिंसा यात्रा का आगाज किया। अहिंसा यात्रा के द्वारा आचार्य महाश्रमण जन जन में सद्भावना का प्रसार, नैतिकता का प्रचार व नशामुक्ति पर सघन कार्य करेंगे।

अपने जीवन के 53 वर्ष परोपकार को समर्पित करने वाले आचार्यश्री महाश्रमण ने शुभारंभ समारोह में कहा कि अहिंसा, संयम, तप युक्त धर्म मंगलकारी है। यह मंगलमय धर्म हमारे साथ रहे और यह यात्रा धर्म यात्रा बने यह मंगलकामना करता हूं। मैं सम्पूर्ण धर्म संघ के लिए यही संदेश देता हूं कि वो चित्तसमाधि में रहे। आचारनिष्ठा, आत्मनिष्ठा आदि पंचनिष्ठा में निरंतर रमण करते रहे। यात्रा के शुभारंभ पर आचार्य महाश्रमण ने मंत्रोच्चार के साथ मंत्री मुनि से मंगलपाठ का श्रवण किया। उन्होने कहा कि अहिंसा यात्रा देश व सम्प्रदाय की सीमा से परे प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर सद्भावना का भाव विकसित करेगी।

मुख्य अतिथि नेपाल के उपराष्ट्रपति परमानन्द झा ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण केवल जैन धर्म के ही आचार्य नहीं अपितु जन जन की चेतना का जागरण कर विश्व गुरु कहलाने के हकदार हैं। आप अभी तक देश के विभिन्न प्रांतो की लगभग 30 हजार किमी की पदयात्रा कर स्वस्थ समाज, स्वस्थ राष्ट्र एवं स्वस्थ विश्व की संरचना के लिए नैतिकता, ईमानदारी, नशामुक्ति साम्प्रदायिक सौहार्द का संदेश दिया है। आज आप लाल किले की ऐतिहासिक स्थली से सद्भावना का संप्रसार, नैतिकता का प्रचार–प्रसार और नशामुक्ति का अभियान जैसे विशाल और पवित्र उद्देश्यों को लेकर अहिंसा यात्रा का शुभारंभ कर रहे हैं। मुझे ऐसे ऐतिहासिक क्षण का साक्षी बनने का मौका मिला जो मेरा सौभाग्य है। यह मेरे जीवन का सबसे ज्यादा अनुपम और यादगार पल रहेगा। मेरा यह विश्वास है कि आपकी यह अहिंसा यात्रा संपूर्ण विश्व को नई दिशा देगी और दो देशों के आपसी भाईचारे में और ज्यादा प्रगाढता लायेगी।

स्वामी चिदानंद सरस्वति ने यात्रा का समर्थन करते हुए विश्व शांति स्थापित होने की कामना की। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा, मंत्रीमुनि मुनिश्री सुमेरमल, हरियाणा की पूर्व शहरी विकास मंत्री सावित्री जिंदल, अहिंसा यात्रा प्रबंधन समिति के संयोजक कमल कुमार दुगड़, आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति संयोजक कन्हैयालाल पटावरी, अहिंसा यात्रा शुभारम्भ समारोह के संयोजक संपतमल नाहटा ने अहिंसा यात्रा के लिए मंगलकामना की। शासनश्री संत पंचक ने आगम सूत्रों से अभ्यर्थना की। साध्वी वृंद, दिल्ली तेरापंथ समाज ने सामूहिक गीत से अभ्यर्थना की। कार्यक्रम का संचालन मुनि कुमारश्रमण ने किया।

अहिंसा यात्रा के शुभारंभ पर मौन जुलुस

आचार्य महाश्रमण ने अपनी अहिंसा यात्रा के शुभारंभ पर अहिंसा का प्रथम संदेश देते हुए अपने श्रद्धालुओं को मौन जुलुस का इंगित किया। आचार्य महाश्रमण का मानना है नारों से होने वाले ध्वनि प्रदुषण से भी यथासंभव बचना चाहिए। लाल किले से दरिया गंज तक चले इस जुलुस में देश के अनेक राजनितिज्ञ, पत्रकार साहित्यकार उद्योगपति और हजारों श्रद्धालु शांत भाव से चल रहे थे। आचार्य महाश्रमण के आगे जैन ध्वज, साध्वीवृंद, समणीवृंद और उनके पीछे मुनिवृंद का काफिला था। धवलिम पंक्ति के बीच आचार्य महाश्रमण इन्द्र के सामान सुशोभित हो रहे थे।

समारोह बना सद्भावना की अनूठी विशाल

अहिंसा यात्रा शुभारंभ समारोह सद्भावना की अनूठी मिशाल पेश करने वाला साबित हुआ। समारोह में हिन्दु, मुश्लिम, सिख ईसाई, जैन बौद्ध आदि अनेकों धर्मों के लोग थे। तो वहीं नेपाल और भारत के विभिन्न प्रांतों से आए हजारों श्रद्धालु भिन्न–भिन्न भेष भूषा में थें, पर इस विभिन्नता में भी एक ही विचार मिल रहा था। सभी लोगों के मन में अहिंसा यात्रा को सफल बनाने की मंगलकामना थी।

सबसे पहले गुरु को वंदन

आचार्यश्री महाश्रमण ने अहिंसा यात्रा को प्रारंभ करने से पूर्व भगवान महावीर का स्मरण करते हुए अपने गुरु आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ को वंदन किया। उसके पश्चात् रत्नाधिक संतों सहित संघ से अनुमति ली और अपने संघ द्वारा विजय पाताका फैराने की मंगलकामना को स्वीकार किया।

सम्पूर्ण विश्व में हुआ मंगलभावना अनुष्ठान

अहिंसा यात्रा के सफल बनाने के लिए विश्व के कोने कोने में रह रहे श्रद्धालुओं और विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों ने एक ही समय पर तप और मंत्रोंच्चार का अनुष्ठान कर मंगलभावना व्यक्त की। 'संती संतीकरे लोए' मंत्र के पाठ से मंगलम वातावरण का निर्माण कर सम्पूर्ण विश्व में अहिंसा यात्रा की सफलता का संदेश दिया।

इन देश व राज्यों से गुजरेगी अहिंसा यात्रा

अहिंसा यात्रा के लिए निर्धाररित पथ में नेपाल, भूटान, उतरप्रदेश, हिरयाणा, राजस्थान, मध यप्रदेश, बिहार, आसाम, मेघालय, सिक्किम, पश्चिम बंगाल, झारखण्ड, उड़ीसा आदि देश व राज्य होंगे।

जुलूस ने तोड़े सारे रिकौर्ड

आचार्य महाश्रमण ने जब लाल किले से अहिंसा यात्रा प्रारंभ की तो जुलूस का प्रथम छोर अगले पड़ाव पर पहुंच गया था। 2 किमी. लम्बे जुलूस ने सारे रिकॉर्ड तोड़ दिये। जुलूस में आचार्य महाश्रमण के साथ चल रहे नेपाल के उपराष्ट्रपति परमानन्द झा, स्वामी चिंदानन्द सरस्वति सहित सैंकड़ो साधु साध्वियों को देखने के लिए सड़क के दानो और भीड़ उमड़ रही थी। यह पहला अवसर था जब कोई विदेश के उपराष्ट्रपति देश कि सड़कों पर पैदल चल रह थे।